

शेषरचंद्र शेषरचंद्र शेषरतेन

मः॥१॥

इति श्रीमाकंडेति

तं शिवायकं संहरं निम्नं

चतुर्दशीतिथ्यशुक्लवारसंहरं

नक्षत्रप्रवणचंद्रमध्यवरदा॥

प्रवणशुद्धिप्रभसंवत्सरे

प्रठाशसेउणन्वादिना

॥२२॥ स्तो॥

॥शि॥ व

ॐ नमः ॐ नमः सिद्धं जगत  
प्रसिद्धं नोपनबुद्धं मडमते ॥ प्रा  
प्तेन न हिते मर्णे न हिन हिन सत  
उद्धीकर्णे ॥ मा भज्ये न वेद्यार्थं  
कश्चित् कार्यं वर्णं वर्णं ॥ १ ॥ भज  
गोविंदं मज्जगा विंदंगो विंदं भज  
तवे ॥ ॥ बालस्यावत क्रीडस

॥ करतलमिहातरतलवासा ॥ अ  
 स्तरपिनमुच्यतथासापासा ॥ ६ ॥ भ  
 जगोविंद ॥ रथ्याकर्षटविवर्जितकंथा  
 ॥ ७ ॥ एणपुणविवर्जितपंथा ॥ न  
 त्वं नखं नायं लोका ॥ प्रसापकमर्थ  
 क्रयेते शोका ॥ भजगोविंद ॥ ८ ॥ ताह  
 तलेकासंसार ॥ दीरेविलेप्रवारा

॥ २४ ॥ दे  
 ॥ गो ॥ विं ॥



॥ सुखे नीरे स्रज्जालार ॥ वेस्य गते गा  
काम विकारा ॥ ८ ॥ भज गोविंदं भज  
गोविंदं गोविंदं भज सुदभते ॥

इति श्री संकराचार्य विरचितं गोवि  
दस्तोत्रं संपूर्णं ॥ हार वैकुण्ठ देवी  
दे ॥ इंद्राक्षी ॥ शिवायु यग्योपवी

तुं ॥ गोविंदं भज ॥ संसारे प्रभंतसु जी ॥  
लिसुतुम मोकमताम जी ॥

उं जातं दशनचक्षुः नंतुं उं वृद्धे जातया रि  
 स्वादं उं प्रस्तदपनं चतन्यास्तपिं उं  
 मज्जगे विंदं ॥ ४ ॥ नप्रीस्तनमरिज्ज्वन  
 वे शं दृष्टमायामोक्षवे शं एत नमा  
 सविस्तदविक्काशं मनसविचस्पं  
 वारं ॥ ५ ॥ मज्जगे विंदं ॥ अग्रे वह्ने प्रष्टे  
 भानु रात्रौ च विवस्वतमर्पति जनु

